National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(62): 28-30
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

श्री सुनील कुमार शिरपूरकर
सहायक प्रवक्ता,
राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तिकरण-संस्थान, देहरादून.

Correspondence:
श्री सुनील कुमार शिरपूरकर
सहायक प्रवक्ता,
राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तिकरण-संस्थान, देहरादून.

दिव्यांगजनों की आर्थिक आत्म निर्भरता का विश्लेषणात्मक अध्ययन: दिव्यकला मेला के विशेष संदर्भ में

श्री सुनील कुमार शिरपूरकर

सारांश

भारत सरकार द्वारा दिव्यांगजनों को सक्षम, आत्मनिर्भर तथा सार्थक बनाने के लिए समय-समय पर अनेक पहल किए गए हैं। जिसमें से दिव्यकला मेला एक अनूठी पहल है। यूं तो भारत एक मजबूत सांस्कृतिक विरासत वाला लोकतांत्रिक देश है जहां पर कला संस्कृति और परंपरा की जड़े बहुत गहरी हैं। यहां पर क्षेत्र विशेष की अपनी-अपनी क्षमताएं, शिल्पकला, विशेष कलात्मकता और लोकमान्यताओं के साथ लोक गायकी, लोक वादन और लोक वाद्य यंत्र भी देखने को मिलते हैं । देश के इन्हीं विभिन्न कलाकारों को भारत सरकार एक मंच प्रदान करने का प्रयास कर रही है जिसे हम दिव्यकला मेले के रूप में जान सकते हैं । जहां यह मेला एक ओर देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए कलाकारों, बुनकरो तथा अन्य छोटे-छोटे स्तर पर स्वयं का व्यवसाय चलाने वाले दिव्यांगजनों को विशेष-तौर पर समर्पित होता है जो अपने जीवन में आशावादी दृष्टिकोण रखते हुए आत्मनिर्भरता के लिए प्रेरित होते हैं और समुदाय में प्रेरणा स्रोत भी बनते हैं वही इस मेले के माध्यम से आधुनिक तरीके से दिवयंगजन किस प्रकार से अपनी शिक्षा दीक्षा प्राप्त कर रहे हैं, विभिन्न राष्ट्रीय संस्थानो द्वारा यह जागरूकता प्रसारित करने का प्रयास भी किया जाता हैं । दिव्यकला मेला एक ऐसा प्रयास है जो दिव्यांगजनों की प्रतिभा को समर्पित है तथा उन्हें समाज के सामने समान अवसर तथा समान अधिकार देकर उन्हें समाज की मुख्य धारा में समावेश करने का एक प्रयास है।

मुख्य शब्द- दिव्यकला मेला ,दिव्यांगजन, रोजगार, आत्मनिर्भरता, कौशल विकास, व्होकल फार लोकल.

प्रस्तावना : दिव्यकला मेले का परिचय

दिव्यकला एक ऐसा मेला है जिसका आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर किया जाता है। यह एक प्रकार का सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजन है जिसमें दिव्यांग कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्राप्त होता है इस मेले में चित्रकला, मूर्ति कला, हस्तशिल्प, गृह सज्जा एवं जीवन शैली संबन्धित वस्तुएँ, वस्त्र एवं हाथ करघा उत्पाद पैकबंद एवं जैविक खाद्य सामाग्री, खिलौने एवं भेंट, व्यक्तिगत आभूषण, परिधान सामाग्री जैसी विविधताओं का अनूठा संगम देखने को मिलता है यह आयोजन केवल एक मेला या प्रदर्शनी न होकर समाज को यह संदेश देने का प्रयास करता है कि दिव्यांगजन भी किसी से कम नहीं है। आवश्यकता केवल उनको अनुकूलित वातावरण देने की है । यह मेला दिव्यांगजन कारीगरों एवं उद्यमियों को अपने उत्पादों और कौशल के प्रदर्शन एवं विपणन के लिए एक व्यापक मंच प्रदान करता है । यह आयोजन दिव्यांगजनों के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है ।

दिव्यकला मेले के आयोजन का उद्देश्य

देशभर के विभिन्न शहरों में दिव्यकला मेले के आयोजन करने के निम्नलिखित उद्देश्य है-

1. दिव्यांग कलाकारों को तथा उनकी प्रतिभा को समाज में उचित स्थान दिलाना ।
2. दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर व स्वावलंबी बनाना।
3. समाज में दिव्यांगजनों के प्रति सामान्य सम्मान और समावेशन की भावनाओं को आगे बढ़ना।
4. दिव्यांगजनों तथा उनके उत्पादों को समाज में उचित स्थान दिलाना ।
5. दिव्यांगजनों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना ।
6. दिव्यांगजनों को तथा उनकी प्रतिभा को समाज से परिचित करवाना तथा उनका आत्मविश्वास बढ़ाना ।

साहित्य समीक्षा : दिव्यकला मेला

वैसे तो भारत मैं समय समय पर विभिन्न स्थानो पर विभिन्न प्रकार के मेलों का आयोजन किया जाता रहा हैं जिसमे कलाकारो की कौशलता तथा प्रतिभा को बढ़ावा दिया जाता रहा हैं जिसके लिए कई कार्यक्रम और योजनाएँ भी हैं इसी दिशा मे दिव्यकला मेला भी एक अनूठी पहल हैं इसका आयोजन सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय तथा दिवयंगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा किया जाता हैं।यह मेला दिव्यांग कलाकारों , शिल्पकारों और उद्यमियों को राष्ट्रीय स्तर पर मंच प्रदान करता हैं।

पूर्ववर्ती अध्ययन

एनएचएफ़डीसी (2023) की रिपोर्ट के अनुसार , ऐसे आयोजनो से दिव्यांगजनों के स्टार्टअप को को और उद्यमिता को बढ़ावा मिलता हैं। राव(20।9) कोई भी मेला उद्यमिता को बढ़ाने मे तथा कलाकारों के मनोबल को बढ़ाने मे सहायक होता हैं। कुमार और सिंह ,2022 ऐसे मेले से दिव्यांग कलाकार प्रोत्साहित होते हैं।

दिव्यकला मेले की शुरुआत

दिव्याकला मेले की शुरुआत केंद्रीय सामाजिक न्याय एवम अधिकारिता मंत्रालय के तहत आने वाले दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग (DEPwD) द्वारा किया जाता है । दिव्य कला मेले की शुरुआत 2-7 दिसंबर 2022 को दिल्ली में हुई ।यह मेला " वोकल फॉर लोकल" को आगे बढ़ावा देता हैं । अनेक राज्यों एवं शहरों को सम्मिलित करते हुए अभी तक लगभग 26 दिव्य कला मेला का सफलतापूर्वक आयोजन एनडीएफडीसी, यानी राष्ट्रीय दिव्यंग्जन विकास एवं वित्त निगम (जिसे पूर्व में एनएचएफडीसी कहा जाता था) तथा स्थानीय प्रशासन के सहयोग से आयोजित किये जा चुके हैं। दिव्यकला मेले में जहां एक ओर रंग बिरंगे कपड़ो के स्टॉल नजर आते हैं वहीं दूसरी ओर दिव्यांजनों द्वारा बनाई गई चटपटी तथा स्वादिष्ट खाने पीने की वस्तुवो के स्टॉल भी नजर आते हैं । कहीं बुनकरों द्वारा बनाई गई तरह-तरह के कलाकृतियाँ नजर आती हैं तो कहीं घर-घर में विभिन्न तीज त्योहारों में उपयोग की साज सजावट की वस्तुएं नज़र आती है । साथ ही साथ इन मेलों में " दिव्य कला शक्ति" के माध्यम से स्थानीय दिव्यांग कलाकारों को अपनी गायकी, वादन और नृत्य से अपनी रंगारंग प्रस्तुतियां देने का अवसर भी मिलता है ।

अध्ययन पद्धति

शोध्कर्ता द्वारा इस शोधलेख को लिखने के लिए व्यक्तिगत वार्तालाप, अवलोकन और निरीक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं साथ ही साथ प्राथमिक और द्वितीयक श्रोतों का प्रयोग भी इस शोध मे सामान्य जानकारी जुटाने के लिए किया गया हैं।

दिव्याकला में भाग लेने की प्रक्रिया

दिव्यकला मेला का आयोजन दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, भारत सरकार के अंतर्गत आने वाले स्वायत्त संस्थान एनडीएफडीसी यानी राष्ट्रीय दिव्यंग्जन विकास एवं वित्त निगम द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर समय-समय पर विभिन्न राज्य के शहरों में स्थानीय प्रशासन के सहयोग द्वारा दिव्यांगजनों की प्रतिभा को उचित मंच प्रदान करने के लिए किया जाता है ।इस मेले में प्रतिभाग करने के लिए 40% की दिव्यंगता और UDID का होना अति आवश्यक है । साथ ही साथ मेले में स्टॉल प्राप्त करने के लिए एनडीएफडीसी द्वारा निर्धारित न्यूनतम प्रक्रिया को पूरा करना आवश्यक होता है । जिन दिव्यांगजनों को मेले में स्टॉल आवंटित किया जाता है उन्हें निशुल्क प्रदान किया जाता है और यह स्थानीय स्तर पर होता हैं। साथ ही साथ एनडीएफडीसी द्वारा कुछ सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाती है ताकि दिव्यांगजन को सामान्य तौर पर आयोजित किए जाने वाले मेलों की तरह अनेक जटिलताओं का सामना न करना पड़े और सहजता तथा सरलता के साथ दिव्यांगजन अपने स्टाल के माध्यम से अपने स्वयं के रोजगार को इस मेले के माध्यम से आगे बढ़ा सके ।दिव्यकला मेले में न केवल दिव्यांगजनों के आर्थिक सशक्तिकरण का कार्य किया जाता है बल्कि अनेक अन्य गतिविधियों को भी इसमें शामिल किया जाता है । इस दिव्यकला मेले मैं रोजगार मेले का आयोजन किया जाता हैं जिसमें स्थानीय स्तर पर उद्यमियों और कंपनियों से सहयोग लेकर दिव्यांगजनों के लिए रोजगार उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाता हैं । दिव्यांगजनों के विभिन्न योग्यताओं, कुशलताओं और क्षमताओं को ध्यान में रखकर निजी क्षेत्र में ये रोजगार उपलब्ध कराये जाते हैं इस मेले में दिव्यांगजनों से संबंधित अन्य गतिविधियों जैसे भारतीय पुनर्वास परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त सीआरई कार्यक्रम तथा दिव्यांगता के क्षेत्र से संबंधित विभिन्न राष्ट्रीय दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान तथा सीआरसी के स्टॉल के माध्यम से भी भारत सरकार द्वारा दिव्यांगजन को उपलब्ध कराए जाने वाली सेवाओं योजनाओं तथा समाज में जागरूकता फैलाने का कार्य इस मेले के माध्यम से किया जाता है । साथ ही साथ दिव्यांगजन किस प्रकार से अपनी शिक्षा दीक्षा , व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा आधुनिक तकनीक के सहयोग से अपना जीवन सरल एवं सुगम्य बना रहे हैं आदि की जानकारी प्रदान की जाती हैं।

दिव्यकला मेले की प्रमुख उपलब्धियां

1. दिव्यांगजनों को मंच प्रदान करना –

दिव्यांग कलाकारों और शिल्पकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने और समाज के सामने अपनी कला प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है।

2. आर्थिक सशक्तिकरण –

यहाँ दिव्यांगजन अपनी बनाई हुई वस्तुएँ, जैसे – हस्तशिल्प, सजावटी सामान, कपड़े, आभूषण, खिलौने, पेंटिंग, घरेलू सामान आदि बेचकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनते हैं।

3. रोज़गार और उद्यमिता को बढ़ावा –

यह मेला दिव्यांगजनों में स्वरोज़गार की भावना जगाता है और उनके बनाए उत्पादों को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय बाजार से जोड़ने का अवसर देता है।

4. सामाजिक समावेशन –

इस आयोजन के माध्यम से दिव्यांगजनों की प्रतिभा को समाज की मुख्यधारा में मान्यता मिलती है औरउनके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।

5. कौशल विकास और आत्मविश्वास –

अपने हुनर की सराहना पाकर दिव्यांगजन आत्मविश्वास से भरते हैं, जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास होता है और उनकी कुशलता को प्रातिसाद मिलता हैं।

6. संस्कृति और परंपरा का संरक्षण –

मेले में पारंपरिक हस्तशिल्प, लोककला और स्थानीय कलाओं का प्रदर्शन होता है, जिससे भारतीय संस्कृति के संरक्षण और प्रसार को बल मिलता है।

7. सरकारी एवं सामाजिक सहयोग –

यह मंच दिव्यांग उद्यमियों को सरकारी योजनाओं, सामाजिक संगठनो, गैर सरकारी संस्थानो और अन्य संगठनों से जोड़ता है, जिससे उन्हें अधिक अवसर और संसाधन प्राप्त होते हैं।

सीमाएं

1.आवागमन की सुविधा की कमी

2.प्रतिकूल मौसम मे समायोजन की कमी

3.सुगम्यता की सीमाएं नजर आती हैं।

4.भीड़ का प्रबंधन एक समस्या देखने को मिलती हैं।

उपसंहार

दिव्यकला कौशल मेला न केवल दिव्यांगजनों की प्रतिभा और आत्मनिर्भरता का प्रतीक है बल्कि यह समाज को संदेश भी देता है कि यदि उचित अवसर और मंच मिले तो हर व्यक्ति अपनी विशेष पहचान बना सकता है।इस कला कौशल के माध्यम से दिव्यांगजन अपनी आत्मशक्ति सृजनशीलता और मेहनत से सिद्ध कर रहे हैं कि शारीरिक सीमाएं कभी भी उनकी प्रतिभाओं और कार्य कुशलताओं, क्षमताओं तथा कल्पना शक्ति को बांधकर नहीं रख सकते। अतः हमें दिव्यांगजनों के उत्पादों, रचनाओं, उत्पादित खाद्य पदार्थों तथा अन्य कलाकृतियों को प्रोत्साहित कर उनके आत्मविश्वास को और भी बढ़ाना चाहिए ताकि 'वोकल फॉर लोकल' अभियान को भी दिव्यांगजनों के लिए आगे बढ़ा सके यही सच्चे अर्थों में समावेशी समाज की ओर हमारा अग्रणीय कदम होगा।विकसित भारत की कल्पना मे निश्चित रूप से यह मेला दिव्यांगजनों को विकसित भारत 2047 में शामिल करने की एक अनूठी पहल है।

इस मेले की अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए आप एनडीएफ़डीसी से संपर्क कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1.दिव्यकला मेला पटना 23 अगस्त से 3। अगस्त 2025

2.https://www.facebook.com/share/v/ IR7EP3rq 3/

3.https://depwd.gov.in/en/department-of-empowerment-of-persons-with-disabilities-divyangjan-organizes-divya-kala-mela-divya-kala-shakti-divyan- gjan-rozgar-mela at-bhubaneswar-from-5th-to-I Ith-july-2024/

4.https://timesofindia.indiatimes.com/city/patna/divya-kala-mela-to-start-today/articleshow/ I2346I274. cms

5.https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID =2085596

6.https://depwd.gov.in/en/video/divya-kala-mela-celeb-rating-divyang-artistry-3

7.https://ddnews.gov.in/en/divya-kala-mela-concludes-in-vadodara-celebrating-divyang-talent-and- empower-ment-with-grand-divya-kala-shakti-finale/

https://ndfdc.nic.in/